राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 129
नागिन
नागराज
एक पोस्टर मुफ्त

मानवों ने वायु को प्रदूषित करके पक्षियों को प्रताड़ित किया है। जंगलों की काट-काटकर कई दुर्लभ वन्य प्रजातियों को या तो विलुप्त कर दिया है और या विलुप्त होने के कगार पर पहुंचा दिया है–
पशु-पक्षियों की संख्या घटती जा रही है और मानवों की आबादी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस बढ़ती आबादी को रहने के लिए उपलब्ध भूमि से ज्यादा भूमि की जरूरत पड़ने लगी है। और इस कारण मानवों ने अब समुद्र की जमीन को भी छीनना शुरू कर दिया है–
तूने मुझे विधवा बनाकर मुझ पर कहर ढाया है नागराज, और तेरे साथी मानवों ने हम जल सर्पों की जाति पर जुल्म किया है। इसीलिए मैंने तेरी शक्तियां ले ली हैं ताकि मैं तेरी ही शक्तियों से पहले मानवों को नष्ट करूं, और फिर तुझे मसल दूं! उसके बाद न तो महानगर रहेगा, और न ही महानगर का रखवाला नागराज!
आज कराहेंगे मानव, तड़पेगा नागराज, और बदला ले लेकर हंसेगी...
नागिन
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विनोद कुमार
सुलेखव रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता
©RAJA POCKET BOOKS

महानगर के एक तरफ समुद्र है दूसरी तरफ जंगल, तीसरी तरफ पहाड़ियां और चौथी तरफ दलदल और रेगिस्तान है-
इसीलिए महानगर की बढ़ती आबादी के लिए और अधिक भूमि प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता समुद्र से भूमि छीनना ही बच गया है-
क्योंकि जंगल के कटने से पर्यावरण नष्ट होने का खतरा है और पहाड़ियों तथा रेगिस्तान पर इमारतें बना सकना असंभव है। इसीलिए जैसे मुम्बई वालों ने समुद्र को पाटकर नरीमन प्वाइंट बनाया है, वैसे ही महानगर वाले भी समुद्र को पाटकर सी प्वाइंट बनाने जा रहे हैं-
इस प्रक्रिया को 'रिक्लेमेशन' कहते हैं! इसमें समुद्र के एक हिस्से को चारदीवारी से घेरकर उसके बीच का पानी पम्पों द्वारा निकाल दिया जाता है और फिर उस गड्ढे को भरकर उसको कंक्रीट से सील कर दिया जाता है-
महानगर में इस 'रिक्लेमेशन लैंड' को भरने के लिए महानगर का पूरा कूड़ा करकट आजकल यहीं डाला जाता है-
और इसका फायदा कुछ असामाजिक तत्व भी उठाते हैं-
इस सेठ की फिरौती का पैसा तो हमें मिल गया है। अब अगर इसे छोड़ देंगे तो हम पकड़े जाएंगे। इसीलिए इसके बेहोश शरीर को यहीं डाल दे। कल तक इसके ऊपर टनों कूड़ा गिर चुका होगा। और फिर इसकी लाश हमेशा के लिए दफन हो जाएगी। डाल दे!...
...किसी को सदियों तक यह पता नहीं चलेगा कि सेठ चरतराम आखिर गया तो कहां गया!
अब कुत्ते या चील-गिद्ध तो किसी को कुछ बताने से रहे!
लेकिन कूड़े-करकट पर मंडराने वाले सिर्फ कुत्ते, चील और गिद्ध ही नहीं होते-

बल्कि किस्मत के मारे हुए कुछ ऐसे बच्चे भी होते हैं जिनकी आजीविका कूड़े-करकट से काम लायक चीजें बटोर कर ही चलती है-
अरे! ये कौन है? अपने-आप को कूड़ा समझता है क्या?
नहीं, रुक्कू! किसी ने इसको धक्का दिया है। देखो न, इसके हाथ भी बंधे हुए हैं। बेहोश भी है!
अगले ही पल दोनों बच्चों को पता चल गया कि धक्का देने वाले कौन थे-
इन बच्चों ने हमको देख लिया है!
इनको जिन्दा मत छोड़ना! मार दो!
ये लोग तो गोलियां चला रहे हैं रुक्कू! नीचे झुक!
यहां तो छिपने की जगह भी नहीं है। अब तो हम मर जाएंगे!
पता नहीं रुक्कू! हम अगर बुलाएं भी तो भी हम कूड़ा बीनने वालों की मदद को कौन आएगा?
आएगा भइया, आएगा! वो आएगा, जो सबको बचाता है! अमीर हो या गरीब, छोटा हो या बड़ा, बच्चा हो या बूढ़ा! सबको!
तू किसकी बात कर रही है रुक्कू! कौन है वो जो हम कूड़ा बीनने वालों को भी गोलियों से बचाने आएगा?
नागराज, भइया! हमारा नागराज!
नागराज!
बचाओ नागराज!
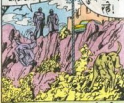
जब किसी की भी, खासतौर से बच्चों की तीखी पुकार वातावरण में फैलती है-
तो वातावरण भी कांप उठता है-
और वातावरण में पैदा हुए कंपनों को महसूस करते हैं, जगह-जगह पर फैले हुए नागराज के जासूस सर्प-
कंपनरूपी पुकार सुनते ही जासूस सर्प अपना फन एक विशेष अन्दाज में पटकने लगते हैं-
और हर टकराहट के साथ मानसिक सन्देश निकलकर महानगर पर से तैरते हुए-
जा पहुंचते हैं उस इन्सानी शरीर तक जो इन नागों का निवास स्थान भी है, और संसार भर के नागों का स्वामी भी। इस अद्भुत शरीर के मालिक को दुनिया कहती है नागराज, और अपराधी कहते हैं अपना काल-
मुझे जासूस सर्प के मानसिक संकेत प्राप्त हो रहे हैं। दो बच्चे खतरे में हैं! और वह स्थान यहां से ज्यादा दूर नहीं है। मुझे वहां तक पहुंचने में एक मिनट से ज्यादा वक्त नहीं लगेगा!
नागराज को रुक्कू और उसके भाई तक पहुंचने में एक मिनट का समय लगना था-

लेकिन पूरे एक मिनट तक अपनी जानें बचाए रखना दोनों बच्चों के लिए बहुत मुश्किल था-
पर वे कुछ न कुछ करके अब तक अपने-आपको सही सलामत रखे हुए थे-
मुझे कसके पकड़े रहना रूपकू! जब तक नागराज न आए तब तक हमको बचते रहना होगा। यहां पर तो बचने की कोई जगह नहीं है। हमको ऊपर पहुंचकर ही बचने की कोई जगह ढूंढनी होगी!
दोनों बच्चे सही-सलामत ऊपर तो पहुंच गए थे लेकिन बचने की बालसुलभ कोशिश में वे मौत के और नजदीक आ गए थे-
आहा! अब ये हमारे जाल में आ गए फकीरा!
इनको दोनों तरफ से घेरकर मार डालो!
हाहाहा! बड़ा नचाया तुम दोनों ने हमारी गोलियों को! पर अब खेल खत्म हुआ! अब गोली अन्दर और दम बाहर होगा!
भइया!
दोनों तरफ से गोलियों की बौछार तड़तड़ाकर बच्चों की तरफ लपकीं-
तड़ तड़ तड़ तड़
धांय धांय
मौत करीब थी, और बच्चों का रक्षक नागराज दूर-
लेकिन अगले ही पल स्थिति पलट गई-
रक्षक करीब आ गया था-
और उसे देखकर मौत भी दूर भाग गई थी-
नागराज
नागराज आ गया! आ गया!
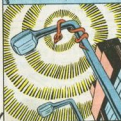
नागराज! तु... तुझे और कोई काम नहीं है?
कूड़ा बीनने वालों ने जरा सा चिल्ला दिया और तू आ गया?
मेरा काम ही यही है कमीने!
और जहां तक इन बच्चों की बात है तो ये सिर्फ कूड़ा बीनते ही हैं...
धाड़
...लेकिन तुम लोग तो खुद कूड़ा ही हो!
समाज का कूड़ा जिसे नागराज ने साफ करने की कसम खाई है।
तड़ाक
मामूली गुंडों के लिए नागराज के एक-एक वार ही काफी थे-
अब बच्चे खतरे के बाहर थे-
शुक्र है भगवान का कि मैं सही वक्त पर पहुंच गया। पर तुम दोनों यहां क्या कर रहे थे?
हम कूड़े से प्लास्टिक और कागज वगैरह चुन-कर अपना पेट भरते हैं नागराज! यहां पर कूड़ा बीनने आए थे!...
...पर तभी इन लोगों ने उस आदमी को नीचे धक्का दे दिया। उसे बचा लो नागराज! वह अभी जिन्दा है!
उसे तो मैं बचा ही लूंगा! पर तुम दोनों बहुत बहादुर बच्चे हो! तुम्हारे माता-पिता क्या करते हैं?

वे दोनों एक साल पहले मर गए! एक मकान बन रहा था। गिर गया। दोनों उसी के नीचे दबकर मर गए। दोनों मकान बनाते थे!
जानते हैं!
ओह! एक काम करो! मैं इन दोनों गुंडों को पुलिस स्टेशन और इस आदमी को अस्पताल छोड़ने जा रहा हूं। तुम लोग 'भारती कम्युनिकेशंस' की इमारत में पहुंच जाओ। जानते हो न कहां है भारती कम्युनिकेशंस?
गुड!
वहां पर जाकर मिस्टर राज से मिलना! मैं मिस्टर राज को सूचित कर दूंगा! फिर जैसा वे कहें वैसा करना! ठीक है?
ठीक है नागराज!
फिर कब मिलोगे नागराज?
मिलूंगा, बच्चो! जल्दी मिलूंगा!
मुझे बहुत जल्दी-जल्दी काम करना होगा! क्योंकि इन लोगों को अपनी-अपनी जगहों पर पहुंचाने के बाद मुझे राज के रूप में भारती कम्युनिकेशंस पहुंच कर उन बच्चों से भी मिलना है!
इसी वक्त- महानगर के 'रिक्लेम' किए जा रहे तट के पास-
समुद्र की सतह से कई किलोमीटर नीचे-
आऽऽऽर्घ! मेरा... दम घुट रहा है... मैं सांस...सांस...
सागरनाथ! यह तुमको क्या हो रहा है?

ये दोनों सर्प, जलसर्पों की एक अति प्राचीन प्रजाति नीरनागों के एक कबीले के सदस्य थे। इच्छाधारी नागों की यह खास प्रजाति लाखों वर्षों से समुद्र तल को अपना निवास स्थान बनाए हुए थी। लेकिन आज मानवों के क्रिया-कलापों के कारण इनकी प्रजाति खतरे में पड़ने जा रही थी-
क्या हुआ, धामिन वाला? तुम एकाएक क्यों चिल्ला उठीं? क्या किसी खतरनाक समुद्री जीव ने हमला कर दिया है?
नहीं, महाव्याल! आपकी छत्रछाया में रहने वाले नीरनागों पर हमला करने का दुःस्साहस किसी समुद्री जीव में नहीं है।... पर बिना किसी कारण के न जाने क्यों मेरा भाई सागरनाग एकाएक तड़पने लगा और फिर बेहोश हो गया!
ओह! आओ, इसको तुरन्त सिंधु वैद्य की बांबी में ले चलते हैं...
वे इसका इलाज भी करेंगे और इसके बेहोश होने का कारण भी बता देंगे!
कुछ ही देर बाद- सिंधु वैद्य की बांबी में-
मुझे खेद के साथ कहना पड़ रहा है महाव्याल कि सागरनाग अब हमारे बीच में नहीं रहे। अगर आप इनको थोड़ी देर पहले ले आते तो शायद हम इनको बचा लेते!
नहीं! ऐसा नहीं हो सकता! सागरनाग मुझे छोड़कर नहीं जा सकता है। नहीं जा सकता!

मानवों की इस ग्रह पर कब्जा करने की भूख बढ़ती जा रही है। अब उन्होंने हमारे साम्राज्य को भी निगलना शुरू कर दिया है। इसका दंड मानवों को भुगतना पड़ेगा। समुद्र से छीनी गई भूमि को वापस करना पड़ेगा उन्हें!

महाव्याल फिर से उस भूमि को समुद्र का तल बनाएगा!

मैं वापस लाऊंगा उनसे वह भूमि!

amaanoddude18
कुछ ही देर में महाव्याल, अपनी रानी समेत अन्य नीरनागों के साथ विचार-विमर्श कर रहा था–
मैं आपका सेनापति वारीष हूं महाव्याल! परन्तु मानवों को सबक सिखाने के लिए आपका जाना ही सबसे ठीक होगा। क्योंकि सिर्फ आपमें ही वे शक्तियां हैं जो मानवों को सबक सिखा सकती हैं! महामंत्रीजी का भी यही विचार है!
तुम ठीक कह रहे हो वारीष! जो समुद्र से भूमि छीन सकते हैं। उनसे निपटना आसान काम नहीं होगा!
सिर्फ मेरे पास ही ऐसी शक्तियां हैं जो मानवों का दिमाग ठिकाने लगा सकती हैं!
पर महाराज, इसमें आपकी जान का खतरा हो सकता है! मानवों की शक्ति को कम करके मत आंकिए!
मैं अगर नहीं गया तो पूरी नीर-नागजाति की जान को खतरा हो जाएगा, रानी नागिन! मुझे जाना ही होगा!
निश्चिंत होकर जाइए, और विजयी होकर लौटिए राजन!
आपकी अनुपस्थिति में मैं नीरनागों पर कोई आंच नहीं आने दूंगा!
धन्यवाद, नीरगुरू! अब मैं निश्चिन्त होकर जा सकता हूं!
हम भी निश्चिन्त हो सकते हैं वारीष। लगता है कि जिस मौके की हमको तलाश थी वह मौका आ गया है!
आप ठीक कह रहे हैं महामंत्री! ठीक कह रहे हैं!

उधर एक षड्यंत्र की नींव पड़ रही थी, और इधर एक अच्छे काम की नींव पड़ने जा रही थी–
भारती कम्युनिकेशंस में–
मैडम भारती!
यस! हू इज...?
मिस्टर राज! तुम अब तक थे कहां? और... ये लोग कौन हैं? इन पर कोई प्रोग्राम बन रहा है क्या?
न... नहीं, नहीं, मैडम! इनको तो नागराज ने भेजा है। मेरे पास!
ओह! पर नागराज ने इनको तुम्हारे पास क्यों भेजा है? नाऊ दिस इज टू मच! तुम मेरे चेम्बर में आओ!
ओ... ओ॰ के मैडम! तुम दोनों यहीं रुकना!
म... मैं अभी आता हूं!
आज तो हमारे पी॰ आर॰ ओ॰ की नौकरी गई! एक तो दो घंटे लेट आया है, और ऊपर से इन भिखा-रियों को यहां ले आया!
तुम ठीक कह रहे हो चोपड़ा! मैडम बहुत गुस्से में थीं! राज ने मैडम को नाराज कर दिया। ही ही ही!

लेकिन सच्चाई तो कुछ और ही थी! भारती कम्युनिकेशंस के कर्मचारी यह नहीं जानते थे कि राज उनकी बॉस का भी बॉस है–
तुमने जब आँख मारी, तभी मैं समझ गई थी कि तुम मुझसे अकेले में बात करना चाहते हो। पर चक्कर क्या है? तुम इन बच्चों को कहाँ से ले आए?
जवाब में राज, भारती को सारा घटनाक्रम सुनाता चला गया–
ये और इसी तरह के और बच्चे भी हमारे देश के भविष्य का ही एक हिस्सा हैं। अगर इनको सही सुविधाएं मिलें तो इनमें से ही कोई वैज्ञानिक निकल सकता है, कोई सैनिक और कोई राष्ट्रपति भी बन सकता है!
बात तो सही है, पर तुम क्या करना चाहते हो? साफ-साफ बताओ!
मैं इन बच्चों के लिए एक ऐसा बोर्डिंग स्कूल बनाना चाहता हूं जिसमें ऐसे बच्चों के रहने-खाने से लेकर सारी चीजों की मुफ्त सुविधा कराया जाए। और उसका पूरा खर्चा भारती कम्युनिकेशंस उठाए। तुम आज से ही ऐसा स्कूल बनाने की योजना बनाकर उस पर अमल शुरू कर दो!
और तब तक इन दोनों बच्चों के रहने-खाने की व्यवस्था कर दो!
राइट, बॉस! काम हो जाएगा!
अरे, फोन!
ट्रिन ट्रिन ट्रिन
यस!
मैडम, 'बी प्वाइंट' पर, जहां पर समुद्र को भराजा रहा है, वहां पर कुछ गड़बड़ हो रही है। हमको तुरन्त एक न्यूज टीम भेजनी चाहिए!
ओ.के.! भेज दो!

amaancooldude18
सी प्वाइंट पर ? लेकिन मैं तो खुद अभी-अभी सी प्वाइंट से आ रहा हूं! वहां पर तो सब शान्त था!
सी प्वाइंट कई वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ इलाका है नागराज! हो सकता है कि गड़बड़ी किसी और तरफ हो रही हो!
शायद ऐसा ही हो! और हो सकता है कि गड़बड़ मामूली सी ही हो! लेकिन मेरा दिल कह रहा है कि नागराज को वहां पर पहुंचना ही चाहिए!
तुम्हारे दिल की आवाज कभी गलत नहीं होती है नागराज! अगर तुमको आभास हुआ है तो गड़बड़ बड़ी ही होगी!
कुछ ही पलों बाद, नागराज नागरस्सी पर लहराता हुआ 'सी प्वाइंट' की तरफ बढ़ रहा था—
जहां पर गड़बड़ हो तो रही थी, पर गड़बड़ करने वाला फिलहाल नजर नहीं आ रहा था—
यह कैसी आफत है। बाकी का समुद्र एकदम शान्त है, लेकिन इधर लहरों ने बैरियर को तोड़कर रिक्लेम्ड लैंड में प्रवेश कर लिया है!
ऐसे तो ये सब-कुछ बहाकर ले जाएगी। हमारी महीनों की मेहनत बरबाद हो जाएगी!
देखो, कूड़ा भी ऊपर उछल रहा है! पर कैसे?
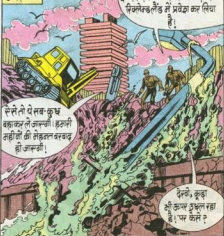
और सवाल पूछने से पहले ही दोनों के मुंह बन्द हो गए—
आक्! ये...क... कूड़ा थू, थू!
फ़च्च
इससे पहले कि दोनों थूक भी पाते, कोई चीज उनके जबड़ों से टकराई और उनके होश छीन ले गई—
गड़बड़ी की खबर पाकर पहुंची अत्याधुनिक शस्त्रों से लैस पुलिस फोर्स स्तब्ध रह गई—
अरे! ये हरकत किसकी हो सकती है! जरूर किसी घूसखोर कॉन्ट्रेक्टर ने जानबूझकर इसका बेस कमजोर बनाया है!
नहीं, हत्यारों! यह विनाश किसी मानव के कारण नहीं, मेरे कारण हो रहा है। महाव्याल के कारण! वैसे तो मैं सिर्फ निर्माण कार्य ही तोड़कर चला जाता, परन्तु तुम लोगों ने मेरे एक अनुचर की जान ली है। उसका फल तो तुम लोगों को भुगतना ही पड़ेगा!

य...ये क्या चीज है सर?
जो भी हो, पर इस तोड़-फोड़ का कारण यही है! खत्म कर दो इसको!
गोलियों की पहली खेप महाव्याल का शरीर छलनी कर देने के लिए बढ़ चली-
तड़ तड़
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
और उसी पल महाव्याल के शरीर से पानी की तेज धारें फूट पड़ीं। गोलियां उनसे टकराकर ठंडी भी हो गईं और उनकी दिशा भी बदल गई-
अब बारी महाव्याल की थी-
उसने सिपाहियों के पास की भूमि पर एक अद्भुत सा दिखने वाला शंख फेंका-
और पथरीली जमीन रेतीला दलदल बनने लगी। सिपाहियों के शरीर उस दलदल में तेजी से धंसने लगे-
अरे! य..यह क्या? बचाओ!

घबराओ मत! मैं तुमको इतनी आसानी से मरने नहीं दूंगा! मैं तुम लोगों को इतनी भयानक मौत दूंगा कि आइन्दा समुद्र की तरफ रुख करने से पहले ही डर के मारे मानवों की जान निकल जाए!
टनों वजनी 'अर्थमूवर' सिपाहियों को जिन्दा कुचल देने के लिए हवा में आगे लपका—
लेकिन रुख बदलकर दूसरी तरफ जा गिरा—
अपने शरीर में असंख्य नागों की शक्ति भरे नागराज घटनास्थल पर आ गया था—
आहा! तुझमें तो मेरे टक्कर की शक्ति है मानव! मानवों में तो इतनी शक्ति नहीं होती! कौन है तू? महाव्याल को अपनी जान क्यों सौंपना चाहता है?
मुझे नागराज कहते हैं महाव्याल! और मेरी जान तो वही ले सकता है जिसने मुझे यह जान दी है! तू नहीं!

नागराज! मैंने सुना है तेरे बारे में! पूरे संसार के सर्प तेरा लोहा मानते हैं! पर तू हमारा साथ छोड़कर मानवों का साथ क्यों दे रहा है?
मैं सिर्फ न्याय और धर्म के साथ हूं। शान्ति चाहता हूं, और जो अशान्ति फैलाता है मैं उसके खिलाफ हूं। और फिलहाल इस वक्त तुम अशान्ति फैला रहे हो!
उसका कारण है नागराज! मानवों की हरकत के कारण हम 'नीरनागों' का अस्तित्व खतरे में पड़ रहा है! और मानवों को मैं जानता हूं। जब तक मैं मानवों को एक ऐसा सबक न दे दूं, जिसको याद करके ये थरथरा उठें, तब तक ये अपनी हरकत बन्द नहीं करेंगे! इस काम में मेरी मदद करो नागराज!
मसले लड़ाई से नहीं, बातचीत से हल होते हैं, महाव्याल!...
...यह टकराव का रास्ता छोड़ दो, फिर मैं तुम्हारी मदद करूंगा!
मैं समझ गया नागराज! यानी तुम भी मेरे खिलाफ हो! तब तो सबसे पहले तुमको ही रास्ते से हटाना पड़ेगा!
आऽऽह!
महाव्याल के मुख से निकली पानी की धार ने नागराज के शरीर को चीरकर रख दिया—

आऽऽऽह! मैंने सुना तो था कि पानी की तेज 'जेट धारें' स्टील की मोटी चादर को भी काट सकती हैं, पर ऐसा देखा तो पहली बार है कि पानी की धार मेरा शरीर भी छेद जाए!...
... यह फिर पानी की धारों से मुझ पर हमला कर रहा है! मुझे इनके बीच से होकर इस तक पहुंचना पड़ेगा!
और यह काम मेरे लिए इतना मुश्किल नहीं होगा क्योंकि मैं अपने शरीर को सर्प की तरह लचीला कर सकता हूं!
पानी की धारों के बीच से होता हुआ नागराज-
चकित खड़े महाव्याल तक पहुंच गया! और इससे पहले कि महाव्याल कोई और वार कर पाता, उसका शरीर हवा में उड़ गया-
धाड़
तूने महाव्याल पर वार करके अपनी मौत को बुला लिया है नागराज! अब तू मेरी विषलहरी से नहीं बचेगा। देखूं कि तेरा तीव्र जहर तुझे बचा पाता है या नहीं?
फूऊऊऊऊ

नागराज ने विषलहरी के रास्ते से हटने की कोशिश की–
लेकिन विषलहरी पानी में घुले रंग की तरह, नागराज के आसपास की हवा में घुलगई थी–
ओह! इसका विष अलग प्रकार का है! मुझको तक हल्का सा चक्कर आ गया है!
नागराज भी यह विषलहरी सूंघकर लड़खड़ा गया–
नागराज की तीव्र विष-फुंकार हवा पर तैरती हुई महाव्याल की तरफ बढ़ी–
देखूं कि मेरी विष फुंकार का इस पर क्या असर होता है?
लेकिन महाव्याल तक पहुंच नहीं सकी–
मैं तेरे विष के विषय में जानता हूं नागराज! मैं इसको अपने पास तक पहुंचकर, अपने को बेहोश करने नहीं दूंगा!
महाव्याल के शरीर से निकली पानी की महीन फुहारों ने हवा में फैले विष को अपने में सोख लिया–
और इससे पहले कि नागराज कोई दूसरा वार सोच पाता, महाव्याल के तंतुरूपी सर्प शरीरों ने बढ़कर नागराज को अपने शिकंजे में कैद कर लिया–
अब तू महाव्याल की कुंडलियों से जिन्दा बाहर नहीं आसका, नागराज!

आऽऽऽह! इसका शिकंजा तो बहुत मजबूत है। यह तो सचमुच अपनी कुंडली में कसकर मेरी हड्डियां तोड़ देगा। लेकिन ऐसा करके यह मेरे इतना पास आ गया है कि मैं इस पर विषदंश का प्रयोग कर सकता हूं! लेकिन ऐसा करने से मुझ पर भी उल्टा असर हो सकता है। एक दूसरा आसान तरीका समझ में आ रहा है!
इच्छाधारी शक्ति को इस्तेमाल करने का तरीका!
अगले ही पल नागराज का शरीर कणों में बदल गया–
अरे! नागराज कहां गया?... अच्छा! तो तू अपनी खास इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग कर रहा है। बहुत अच्छे!
अब तू फंस गया नागराज! अब मैं तुझे वापस अपने रूप में आने नहीं दूंगा!
आह! इसके कंठहार की किरणें मेरे शरीर के कणों में विपरीत शक्ति पैदा कर रही हैं! मैं जुड़ नहीं पा रहा हूं। और इस स्थिति में मैं सिर्फ तीन पलों तक रह सकता हूं!
कणों के रूप में तैर रहे नागराज ने अपनी सारी इच्छाशक्ति को एकत्रित किया–
मुझे अपनी सारी इच्छाशक्ति का इस्तेमाल करना होगा! वरना फिर मैं कभी भी अपने रूप में नहीं आ पाऊंगा। मेरे शरीर कण हमेशा के लिए वातावरण में बिखर जाएंगे!
उसकी शारीरिक और मानसिक शक्ति भी इच्छाधारी शक्ति के साथ जुड़कर एक प्रबल बल पैदा करने लगी–

और नागराज की कोशिश सफल हो गई–
आऽऽऽह! मैं अपने रूप में तो आ गया हूं, पर मुझमें इतनी ताकत नहीं बची है कि मैं महाव्याल का मुकाबला कर सकूं! मुझे शक्ति एकत्रित करने में थोड़ा समय लगेगा, और उस थोड़े समय तक महाव्याल को रोके रखना होगा!
लेकिन महाव्याल को रोकने के लिए नागराज क्या कर सकता था?
तू अपनी ही शक्ति के हाथों शक्तिहीन हो गया है नागराज! अब मेरा एक ही वार तेरी खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े कर देगा!
महाव्याल ने नागराज पर वार करने के लिए हाथ उठाया–
और उसका हाथ उठा का उठा ही रह गया–
अरे! ये... ये विष फुंकार? यह कहां से आई? नागराज तो शक्तिहीन होकर दूर पड़ा है। आऽऽऽह!
तुमको रोकने का यही एक तरीका था महाव्याल! मैं शक्तिहीन जरूर हो गया था, पर मेरे नाग शक्तिहीन नहीं हुए थे! जितनी देर तुम डॉयलाग बोल रहे थे उतनी देर में मेरे सांपों ने एक पतली सी सुरंग मेरे मुंह के पास से लेकर तुम्हारे पैरों तक खोद दी! और उसी सुरंग में मैंने विष फुंकार को फूंक दिया। अब इतनी देर में मेरी शक्ति वापस आ चुकी है, पर तुम शक्तिहीन हो गए हो!
आऽऽऽह! मैं अपने-आपको संभाल नहीं पा रहा हूं!...

... मुझे समुद्र की शरण में जाना होगा! क्योंकि अब सिर्फ सागर ही मेरी क्षीण होती शक्तियों को वापस कर सकता है!

आहा! सागर देव मेरी शक्तियों को मेरे शरीर में फिर से संचार कर रहे हैं! अब मैं अपने अधूरे काम को पूरा कर सकता हूं!...

...इस नगर को तबाह करने का काम!

समुद्र से एक विशाल और ऊंची लहर महानगर की तरफ बढ़ चली। जिसका एक थपेड़ा ही इमारतों को माचिस की तीली की तरह तोड़कर रख देता—

ओह! यह लहर तो महानगर को तबाह कर देगी! मुझे इस लहर को रोकना होगा, 'नागदीवार' बनाकर!

नागराज की कलाइयों से असंख्यों सर्प निकलकर एक ऊंची और मोटी दीवार के रूप में जुड़ने लगे—

डूट पा ५ क
नागद्वीवारी ने पहले थपेड़े को तो रोक लिया। लेकिन लहरों की शक्ति को ज्यादा देर तक नहीं रोक पाएगी! मुझे महाव्याल को रोकना होगा! और वह भी इस नागद्वीवारी के टूटने से पहले!
कुछ ही पलों बाद नागराज, महाव्याल की तरफ बढ़ रहा था-
आहा! अपनी मौत को गले लगाने के लिए खुद ही चला आ रहा है नागराज! आ जा! आज तेरी समुद्र में ही कब्र बना देता हूं!
महाव्याल के पास से उठी उस लहर ने-
नागराज को उठाकर पीछे फेंक दिया-
आऽऽऽह! मैं इन प्रचण्ड लहरों का मुकाबला नहीं कर सकता! इसीलिए अब मैं लहरों के अन्दर नहीं...
...लहरों के ऊपर चलूंगा!
नागराज की कलाईयों में से सर्प निकलकर एक खास आकार लेने लगे-

amaancoolduder3
राज कॉमिक्स
यह खास आकार 'सर्फिंग बोर्ड' का आकार था। अब नागराज को लहरों पर चलने के लिए सवारी मिल गई थी–
अरे! यह तो मेरे पास आता जा रहा है! इसको रोकना होगा! वरना इसकी विष फुंकार मेरे लिए घातक हो सकती है!
नागराज, महाव्याल के अगले वार के लिए तैयार नहीं था–
अरे! य... यह क्या? एकाएक समुद्र के अन्दर से मूंगों की चट्टानी शाखें मुझे अपने शिकंजे में जकड़ रही हैं!
अब तेरा जीवन समाप्त होने वाला है नागराज! जिस देवता को याद करना हो, उसे याद कर ले!
लेकिन इससे पहले कि महाव्याल कोई वार कर पाता–
वह चीख उठा–
खच्चच
आऽऽऽह! यह क्या?
और फिर महाव्याल का शरीर समुद्र में इतना डूबता चला गया–
26

अरे! महाव्याल पर यह घातक वार किसने किया? कौन हो सकता है ये?
ओफ्! ये मूंगों के बंधन तो बहुत मजबूत हैं! मुझे इनको तोड़ने में वक्त लगेगा। और उतनी देर में महाव्याल का न जाने क्या हाल हो चुका होगा!
महाव्याल का हाल करने वाले उसके अपने ही थे-
हमारी योजना सफल रही महामंत्री! नागराज से लड़कर कमजोर हो चुके महाव्याल को हमने खत्म कर दिया!
इसने बहुत वर्षों तक हमको अपने आदेशों पर नचाया! पर अब नीर नाग हमारे इशारे पर नाचेंगे। क्योंकि अब महाव्याल बनूंगा मैं!
उसके लिए जरा इंतजार करना पड़ेगा महामंत्री! फिलहाल तो यहां से तैर लो! कोई आ रहा है!
आने वाली रानी नागिन थी! जो अन्य नीर नागों से महाव्याल और नागराज की मुठभेड़ की खबर पाकर घटनास्थल पर पहुंच रही थी-
महाराज! य... यह आपको क्या हो गया? नागराज ने आपका यह क्या हाल कर दिया? नीर वैद्य! हां... मैं अभी आपको नीर वैद्य के पास ले चलती हूं!
उधर नागराज, कैद से आजाद हो गया था-

अगले कुछ पलों बाद ही नागराज समुद्र की लहरों के बीच, महाव्याल को तलाश कर रहा था–
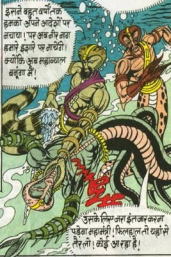
महाव्याल तो कहीं नजर नहीं आ रहा है! लेकिन समुद्र की लहरों में मिश्रित खून साफ नजर आ रहा है। ऐसे घातक रूप से घायल होने के बाद भी महाव्याल कहां जा सकता है?

खैर! उसे ढूंढने में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए! अभी मुझे जमीन में दबे सिपाहियों को बाहर निकालने जाना चाहिए!

और समुद्र की लहरों के पर्दे में–

कहते हुए जुबान लड़खड़ाती है रानी नागिन, परन्तु सत्य बोले बगैर कोई चारा नहीं है। महाव्याल के शरीर में जीवन का कोई लक्षण नहीं है। आम जबान में कहा जाए तो ये... मर चुके हैं!

मर गए! महाव्याल मर गए! असंभव! यह नहीं हो सकता! यह नहीं हो सकता! नागराज इतना शक्तिशाली नहीं हो सकता कि वह महाव्याल की जान ले सके! मैं विधवा हो गई! विधवा हो गई मैं!

परन्तु रानी नागिन को सुनने का होश कहां था–

नागराज, अब तू नागिन के कहर से नहीं बचेगा! तूने मेरी जिन्दगी को अंधकारमय बनाया है, मैं तेरी जिन्दगी में अंधेरा भर दूंगी। नीरगुरू! हां! नीरगुरू मुझे रास्ता दिखाएंगे! नागराज से बदला लेने का रास्ता!

अभी तो महाव्याल की तरफ ध्यान देना है। इनका शरीर मृत जरूर लग रहा है, परन्तु मुझे अभी भी थोड़ी सी उम्मीद है!
और कोई वीर नाग होता तो मैं कभी कोशिश न करता, लेकिन ये चमत्कारी शक्ति वाले महाव्याल हैं। इनकी आत्मा इतनी आसानी से छोड़कर नहीं जा सकती! मैं इनको बचाने में अपना सारा वैद्य का ज्ञान लगा दूंगा। बचा लूंगा मैं इनको! बचा लूंगा!
उधर नागराज अपने ऊपर मंडराते खतरे से बेखबर था—
नागराज!
ओह, निशा! द ग्रेट न्यूज रिपोर्टर ऑफ भारती न्यूज चैनेल!
काहे की ग्रेट नागराज? ग्रेट होती तो समय से यहां पर न पहुंच जाती? सब मामला निपट गया तब पहुंची हूं! अब कम से कम तुम यह तो बता दो कि आखिर यहां पर हुआ क्या था?
यह तुम इन सिपाहियों से पूछ लेना, निशा! मैं अब और नहीं रुक सकता!
निशा के सामने मैं ज्यादा देर तक रुकना नहीं चाहता! ये एक तेज रिपोर्टर है और इसने राज को करीब से काफी बार देखा है। इसको राज और नागराज में समानता ढूंढते ज्यादा देर नहीं लगेगी!
कमाल है! यह तीसरी बार हो रहा है!
मैं जब भी नागराज से कुछ भी पूछना चाहती हूं तो ये बहाना बना कर भाग जाता है।
आखिर ये चक्कर है क्या?

नागराज की इन मामूली समस्याओं के बजाय महाव्याल पर ध्यान देना चाहिए था-
क्योंकि यह लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई थी-
हम! महाव्याल की मृत्यु का धक्का हमको भी लगा है, रानी नागिन! परन्तु हम सागर के प्राणी हैं!...
... भूमि पर रहने वाले नागराज से भूमि पर जाकर लड़ना और जीत पाना आसान काम नहीं है। इसमें जान का खतरा भी हो सकता है।
मुझमें महाव्याल जैसी शक्तियां नहीं हैं नीरगुरू। लेकिन जिस नागिन का सुहाग उजड़ गया हो, उसे अपनी जान की क्या परवाह होगी? आप मुझे रास्ता बताइए। क्योंकि नागराज की जान तो मुझे लेनी ही है!
नागराज शक्तिशाली है, और तुम शक्तिहीन रानी नागिन! यह बाजी तभी पलट सकती है जब नागराज शक्तिहीन हो जाए और तुम शक्तिशाली!
यह कैसे संभव होगा नीरगुरू?
नागयज्ञ से रानी नागिन! हमको नागयज्ञ करना होगा! हांलाकि इस यज्ञ से नागों की शक्ति क्षीण होती है, परन्तु इस यज्ञ के जरिए नागराज की शक्तियां तुम्हारे शरीर में स्थानांतरित हो सकती हैं!
इससे नागराज शक्तिहीन हो जाएगा और तुम शक्तिशाली।
क्या ऐसा संभव है नीरगुरू?

अवश्य संभव है रानी नागिन! परन्तु इसके लिए तुमको मानव रूप धारण करना होगा! क्योंकि नागराज भी मानव रूप में ही रहता है, और उसके मानव शरीर की शक्तियां दूसरे मानव रूप में ही स्थानांतरित हो सकती हैं!
हम इच्छाधारी नागों को मानव रूप में आने में एक पल भी नहीं लगता है नागगुरू! आप यज्ञ की तैयारी शुरू कीजिए! फिर आप जिस समय कहेंगे मैं मानव रूप में आ जाऊंगी!
यह सारा घटनाक्रम जल्दी ही सारे नागनगरों को पता चल गया था—
महामंत्री और सेनापति को भी—
हमारी चाल तो जरूरत से ज्यादा सफल रही, सेनापति! महाव्याल को मारने का इल्जाम तो नागराज पर आ ही गया...
...और रानी नागिन नागराज से बदला लेने आ रही है। अब महाव्याल के बाद रानी नागिन भी मरेगी...
...हमारा रास्ता पूरी तरह से साफ हो जाएगा!
और महानगर स्थित भारती कम्युनिकेशंस में—
बैडलक मैडम! हम जाते समय ट्रैफिक जाम में फंस गए। जब तक सी प्वाइंट पहुंचते, तब तक सब खत्म हो चुका था!
नागराज भी मिला था, पर कुछ पूछने की बात करते ही 'सर्प रस्सी' पर लटककर भाग गया। पता नहीं मुझसे इतना शर्माता क्यों है?
डोंट वरी निशा! नागराज ने मिस्टर राज को फोन करके थोड़ा बहुत बताया है! हम उसी को न्यूज कवरेज में ले लेंगे!

ओऽऽऽ! मैंने पूछा तो नागराज आता गया, और राज जी को बिना पूछे बैठे-बिठाए सारी कहानी बता दी! क्या बात है?
नागराज तुम पर इतना मेहरबान क्यों है, राजबाबू? कहीं तुम कोई इच्छाधारी सांप-वांप तो नहीं हो? हां?
सांप!
सां... सांप का नाम मेरे सामने मत लिया करो निशा!
नागराज मेरा पुराना दोस्त है! अब वह अपनी आप फोन करके सब बताता है तो मैं क्या करूं?
हां, तुम कर भी क्या सकते हो? वैसे नागराज से यह जरूर पूछना कि वह मुझसे इतना शर्माता क्यों है?
पू... पूछ लूंगा! जरूर पूछ लूंगा!
इसी वक्त-सागर के बीच में स्थित एक छोटे से टापू पर-
मैं सर्पयज्ञ आरंभ कर रहा हूं, रानी नागिन!
अपने इच्छाधारी रूप में आ जाओ!
रानी नागिन ने रूप बदलने में एक पल भी नहीं लगाया-
अति उत्तम, रानी नागिन! अब इस शंख को पहन लो! यही शंख तुम्हारे शरीर में नागराज की शक्तियां जाने का द्वार बनेगा।
अब मैं यज्ञ शुरू करता हूं!
ओम ह्रिम ह्रिहीम नाग-राजनाद स्वाहा!
यज्ञ में आहुतियां पड़ने लगीं-

और वहां से दूर बैठे नागराज पर एक अजीब प्रभाव होने लगा-
अरे! यह क्या हो रहा है? मेरे शरीर में एक खिंचाव पैदा हो रहा है!
लगता है जैसे शरीर का मांस हड्डी से अलग हो रहा हो!
ये... तुमको क्या हो रहा है राज?
क... कुछ नहीं भारती! लगता है जैसे पेट खराब हो गया है। म... मैं जरा टॉयलेट होकर आता हूं।
कुछ गड़बड़ है! नागराज को कुछ तकलीफ हो रही है। पर वह निशा के सामने जाहिर होने नहीं देना चाहता!
राज को वाकई तकलीफ हो रही थी-
ओह! मुझे जल्दी से जल्दी अपने केबिन में पहुंचना होगा! कहीं यहीं पर कोई गड़बड़ शुरू हो गई तो मेरा भेद खुल जाएगा!
नागराज का डर सही था-
क्योंकि केबिन में पहुंचते ही-
धम्मम
आऽऽऽह! मेरे शरीर के सर्प अपने-आप बाहर निकल रहे हैं!
मेरी सारी शक्ति लगाने के बावजूद ये रुक नहीं रहे हैं...
मैं राज के रूप में नहीं रह सकता! मुझे अपना राज बनाए रखने के लिए नागराज के रूप में आना ही पड़ेगा!

राज के रूप में से, नागराज का रूप उभरता जा रहा था, और शरीर में से सांपों की बाढ़ तेजी से निकलती जा रही थी-
ओह! मेरे शरीर में रहने वाले खास सर्प भी निकलते जा रहे हैं।
नागद्वीप के इच्छाधारी सर्प...
... शीत नागकुमार...
... देव कालजयी द्वारा वरदान स्वरूप मिले विशेष नागफनी सर्प...
... और... सौडांगी भी! सौडांगी, रुक जाओ! तुम कहां जा रही हो?
मैं नहीं जानती नागराज! कोई शक्ति मुझे न जाने कहां खींच रही है! मैं रुक नहीं सकती!

नागराज को सौडांगी की बात पर गौर कर पाने का मौका ही नहीं मिला–
अरे! सर्परस्सी! अब सर्परस्सी खिंचती आ रही है!
मुझे देखना ही होगा कि मेरे नाग कहां जा रहे हैं, और इस वक्त मैं इनका पीछा सिर्फ एक तरीके से ही कर सकता हूं!
इस सर्परस्सी के साथ-साथ उड़कर!
नागराज को जल्दी ही पता चल जाने वाला था कि नाग कहां जा रहे थे–
नागाधराय शक्ति समोहते ओम ह्रिंही धरधराय स्वाहा!
और अगले ही पल–
आहा! इसकी तो मैंने कल्पना ही नहीं की थी। नागराज स्वयं ही यहां आ गया!
अब तू नहीं बचेगा महाव्याल के हत्यारे!
रानी नागिन अपना सिन्दूर मिटाने के अपराध में तुझे एक वीभत्स मौत देगी!

महाव्याल! महाव्याल की पत्नी हो तुम! पर... महाव्याल को मैंने नहीं मारा!
झूठ बोल रहा है तू! जान जाने के डर से झूठ बोल रहा है। लेकिन ये झूठ तेरी जान नहीं बचा पाएगा!
अब तक तो तुम सिर्फ इसकी सर्प शक्तियों को ही सोख रही थी, रानी नागिन! अब यह सामने आ ही गया है तो इसकी बाकी शक्तियां भी सोख लो!
नागराज के संभल पाने से पहले ही उसकी खास शक्तियां भी रानी नागिन के शरीर में समाने लगीं–
विष फुंकार–
सम्मोहन शक्ति–
अमानवीय शारीरिक शक्ति और दूसरी शक्तियां भी नागराज के शरीर का साथ छोड़ने लगीं–

amaancooldude18
आह! मेरी सारी शक्तियां चली गई हैं! मुझे बहुत कमजोरी महसूस हो रही है!
और तू थोड़ी देर तक सिर्फ इसी लिए जिन्दा रहेगा, ताकि जिस काम को करने से तूने महाव्याल को रोका था, तू वही काम, अपनी आंखों से मुझे करता देखे, और तड़पे!
तुझे ज्यादा देर तक कमजोरी नहीं लगेगी नागराज! क्योंकि थोड़ी देर बाद तेरे शरीर में जान ही नहीं रहेगी!
चल, नागराज! तुझे मानवों की बस्ती के विनाश का नजारा दिखाऊं। विनाश होगा, और तेरी ही नागशक्तियों से होगा!
भारती कम्युनिकेशंस में भारती नागराज को ढूंढती फिर रही थी—
कमाल है! मैंने राज को सबसे पहले यहां यानी उसके केबिन में देखा! नहीं मिला तो भारती कम्युनिकेशंस की पूरी बिल्डिंग छान मारी। पर वह तो कहीं नहीं था। वह कहता यही रहा था कि केबिन में जा रहा हूं!

अरे! बाहर से चीखने चिल्लाने की आवाजें क्यों आ रही हैं?
भारती, बाहर झांकने के लिए आगे बढ़ी–
और उसकी आंखें फटी की फटी रह गई–
ओह! नागराज!
बाहर का दृश्य ही ऐसा था कि किसी का भी कलेजा डर के मारे थर-थर कांपने लगे–
BHARTI Commun

नागिन नागराज की शक्तियों का प्रयोग करके–
महानगर में तबाही फैला रही थी–
कड़ाक
ओह! यह तो भी है, काफी खतरनाक लगती है! इसने नागराज को कैद कर रखा है, और उसी की शक्तियों का प्रयोग करके महानगर में तबाही फैला रही है!
इसको मेरे अलावा और कोई नहीं रोक सकता!
मेरे... यानी फेसलेस के अलावा! क्योंकि फेसलेस की पोशाक, बाबा वेदाचार्य के द्वारा बनाए गए तांत्रिक यंत्रों और ताबीजों से युक्त है। जिन पर किसी भी सांप के जहर का असर भी नहीं होता है।...
... मैं ऐसी ही किसी एमर्जेंसी के लिए फेसलेस की एक पोशाक अपने ऑफिस के सीक्रेट कबर्ड में रखती हूं!
नागराज, खुद नागकैद से आजाद होने का यत्न कर रहा था–
आऽऽह! यह मुझे संभलने का मौका ही नहीं दे रही है! मैं अपने विचारों को केन्द्रित ही नहीं कर पा रहा हूं!
एक बार इस नागकैद से आजाद हो जाऊं तो शायद कोई तरीका सोच सकूं!

लेकिन नागराज को तरीका सोचने की जरूरत नहीं पड़ी-
क्योंकि अगले ही पल एक आकृति ने रानी नागिन के बढ़ते कदमों को रोक दिए-
तड़ाक
आऽऽऽह! रानी नागिन पर वार करने की जुर्रत किसने की?
फेसलेस ने!
जो न तो महामानव पर हुए वार को बर्दाश्त करता है, और न ही नागराज पर हुए वार को!
नागराज को छोड़ दो! वरना मैं तुम्हारी हालत तुम्हारे द्वारा नष्ट की गई चीजों जैसी ही कर दूंगा।
नागराज तो नहीं छूटेगा फेसलेस! पर मैं तुझे जरूर बांध लूंगी!
फेसलेस और रानी नागिन एक-दूसरे से उलझ पड़े, और नागराज को जान संभलने का मौका मिल गया-
... और ये नागराज की नागरस्सी है! पर मैं जोर लगाता रहूंगा! शायद कभी साधारण सी ताकत ही काम आ जाए!
इधर नागराज की कोशिश जारी थी-
अब मैं इस सर्प रस्सी को खोल... आह! नहीं खोल सकता। मेरे शरीर में अब सिर्फ एक साधारण इन्सान की ताकत है!...
और इधर फेसलेस की-
ओह! तेरे पास शायद अपनी शक्तियां नहीं हैं रानी नागिन!

तभी तू सारे काम, नागराज की शक्तियों का प्रयोग करके ही कर रही है।... परन्तु फेसलेस पर ऐसे वार असर नहीं करते!
देखा? फेसलेस को छूते ही ये सांप मुरझाए हुए फूलों की तरह टपक गए। अब फेसलेस का वार झेलने के लिए तैयार हो जाओ!
रानी नागिन के शरीर से आ चिपका—
आऽऽऽह! य... यह क्या हो रहा है? इस ताबीज के, मेरे शरीर से चिपकते ही, मेरे शरीर के सांप कांपने लगे हैं। और इससे मेरे बदन में भी थरथराहट पैदा हो रही है!
फेसलेस के हवा में घूमते हाथ से एक ताबीज छूटकर—
रानी नागिन की कलाइयों से निकली हुई वह सर्प रस्सी भी टूटने लगी, जिसने नागराज को कैद कर रखा था—
वाह! फेसलेस ने मुझे वह मौका दे दिया, जिसकी मुझे तलाश थी!
और फेसलेस ने इस मौके का पूरा फायदा उठाया—
यह ताबीज तेरे शरीर से तभी छूटेगा, जब इसके साथ चिपकी खाल भी खींच ली जाए! अब वह तू कर नहीं सकती!
इसीलिए यह ताबीज तेरे शरीर से चिपका रहेगा, और मैं तुझे पीटता रहूंगा!
तड़ाक

नागराज को आजाद होने का भी मौका मिल गया था, और सोच-विचार करने का भी–
फेसलेस ने मुझे तो मुसीबत से छुटकारा दिला दिया है, पर वह रानी नागिन पर अकेले हावी नहीं हो पाएगा, उसे मदद की जरूरत पड़ेगी। पर वह मदद आएगी कहां से? मुझमें तो फिलहाल खड़े होने की ताकत भी नहीं बची है!...
...रानी नागिन ने मेरी सारी शक्तियां खींच ली हैं! अब मैं शक्ति लाऊं तो कहां से!...
... आज मुझे बाबा गोरखनाथ याद आ रहे हैं। उन्होंने ही मुझको योग विद्या सिखाते हुए कहा था कि हर प्राणी में शक्ति अन्दर से ही आती है। मस्तिष्क ही हर प्राणी के शरीर को कंट्रोल करता है, और योग विद्या द्वारा कुंडलिनी जाग्रत करने के बाद मस्तिष्क, शरीर पर कोई आंच नहीं आने देता!...
... अब योग विद्या ही मेरा एकमात्र सहारा है!
नागराज आसन लगाकर बैठ गया–
और उसकी सुप्त कुंडली जाग्रत होने लगी–
अब नागराज के लिए कुंडलिनी को शीघ्र जाग्रत करना अत्यन्त आवश्यक हो गया था–
क्योंकि फेसलेस को जल्दी ही मदद की जरूरत पड़ने वाली थी–
तू मुझे सिर्फ तभी तक रोक पा रहा है, फेसलेस, जब तक तेरा ताबीज मेरे शरीर से चिपका हुआ है!...
... इसलिए इस ताबीज को मेरे शरीर से अलग होना ही पड़ेगा!...
... चाहे इसके साथ मेरी खाल भी अलग क्यों न हो जाए!
खखट्थ

खाल तो क्या, मेरे शरीर की बोटी-बोटी भी अलग ही जाए, फिर भी मैं तुम मानवों का नाश करके ही रहूँगी!
फ्फ़ऊऊ ऊऊऊऊ
अगर ऐसा है तो तुझे यह मानव रूप त्यागना होगा। जिसमें नागराज की शक्तियां बसी हैं!
और नीरनाग रूप धारण करना होगा! जिसमें नीरनागों की शक्तियों का वास है।... और इस शक्ति से!...
... तुझे तेरे ताबीज बचा नहीं पाएंगे!
तड़ाक
आऽऽह
तू बार-बार ये भूल क्यों जाती है रानी नागिन, कि नागरस्सी विषफुंकार या सर्पसेना कुछ भी मुझ पर असर नहीं करेगी!
इससे पहले कि फेसलेस सीप के वार से संभल पाता, रानी नागिन के हाथों से निकली समुद्री सिवार ने उसको जकड़ना शुरू कर दिया—
?

अब तेरा खेल खत्म हुआ, फेसलेस! बहुत समय बर्बाद कर लिया तूने! पर अब तू किसी और का समय बर्बाद नहीं कर पाएगा! क्योंकि इस पल के बाद तू जिएगा ही नहीं!
मूंगी की घातक तलवार फेसलेस का शरीर छेद देने के लिए हवा को चीरती हुई आगे बढ़ी-
लेकिन फेसलेस के शरीर तक पहुंच पाने से पहले ही उसको रास्ता बदल लेना पड़ा-
तड़ाक
नागराज! तू आजाद हो गया? कोई बात नहीं! तू एक बार मेरे शिकन्जे में फंस चुका है, तो दुबारा भी फंसेगा!
इस बार तुम सफल नहीं होगी रानी नागिन! क्योंकि इस बार मैं योगमाया द्वारा अपनी कुंडलिनी जाग्रत करके आया हूं! अब मेरा शरीर तुम्हारे किसी भी वार को स्वीकार नहीं करेगा!

अच्छा! देखती हूं कि तेरी योग शक्ति ज्यादा शक्तिशाली है या तेरी सर्प-शक्तियां! मैं वार करती रहूंगी! और तब तक करती रहूंगी जब तक तेरी योगशक्ति हार नहीं मान लेती!
आऽऽऽह! मुझे पूरा ध्यान लगाकर अपनी कुंडलिनी को जाग्रत ही रखना होगा! ...
... वरना कुंडली सुप्त होते ही मेरी शक्तियां, मेरी ही जान ले लेंगी!
आऽऽऽह! सौडांगी! अब तुम भी मुझ पर वार कर रही हो!
मैं विवशा हूं नागराज!
सिर्फ शारीरिक रूप से! मानसिक रूप से नहीं! मेरी तंत्र शक्ति ने मुझे मानसिक रूप से गुलाम होने से बचा रखा है। और तंत्र शक्ति ने मुझे यह भी बताया है कि रानी नागिन का शक्ति खींचने का यंत्र उसके गले में लटका हुआ शंख है! उसको उतार लो तो ये तुम्हारी और शक्तियां नहीं खींच पाएंगी!
वाह! यह तो काम की सूचना है। क्योंकि मेरे शरीर के सर्प फिर से द्विगुणित हो रहे हैं!

मजबूर सौडांगी को तो वार करने के बाद रानी नागिन के शरीर में समा जाना पड़ा-
लेकिन नागराज को, सौडांगी आत्मा की एक किरण दिखाई दी थी-
तुम पर वार करना बेकार है नागराज! वैसे भी तुमसे लड़कर मैं समय क्यों खराब करूं! तुमको तो मैं जब चाहूंगी, तब मसल दूंगी!
अभी तो मुझे तेरे नगर को तबाह करना है!
अरे! यह मेरे सर्पों को उस इमारत की नींव खोदने के लिए भेज रही है! मेरे सर्प तो कुछ ही पल में पूरी नींव खोद डालेंगे!
और अब ये नागरस्सी से इमारत को बांध रही है। इसके एक ही झटके से इमारत नीचे आ गिरेगी। मुझे इसको रोकना होगा। और यह काम...
... इसके गले में पड़े चमत्कारी शंख को खींचकर किया जा सकता है!

ओह! तो तुझे किसी तरह से पता चल गया है कि यह शंख ही तेरी शक्ति सोखने का तरीका है। पर अब इसके मेरे शरीर से अलग होने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा!...
... क्योंकि अब तक मैं तेरी इतनी शक्तियां सोख चुकी हूं कि उनकी ही मदद से मैं तुझे भी खत्म कर सकती हूं! और महानगर को भी नष्ट कर सकती हूं!
ओफ! इससे शंख छीनने की धुन में मेरा ध्यान भंग हो गया और मेरी कुंडलिनी सुप्त हो गई! पर शंख छीनने से मेरी शक्तियां इसके पास से वापस क्यों नहीं आईं? ओह! समझा! मैं अपनी शक्तियां वापस ले सकता हूं। लेकिन मुझे मौका मिलेगा या नहीं?
नागराज अगर रानी नागिन के वारों से संभल पाता तो जरूर कुछ कर पाता—
और उसको यह मौका फेसलेस ने दे दिया—
नागराज, यह ताबीज पकड़ो!
ताबीज हाथ में आते ही—
नागराज एक तरफ भागा खड़ा हुआ—
अरे! यह नागराज को क्या हो गया? मेरा ताबीज तो इसको रानी नागिन के सर्पवारों से बचा सकता था। फिर ये महानगर को खतरे में छोड़कर कहां भागा जा रहा है?

नागा, नागराज, नागा! तुझे तो मैं जब चाहूंगी ढूंढकर मार दूंगी। फिलहाल तो मैं मानवों को सबक सिखाऊंगी! पूरे महानगर को नष्ट करके!
नागराज क्या सचमुच डर गया था? क्या इसे मानवों की जान बचाने की परवाह नहीं थी?
नहीं! सच तो कुछ और ही था—
मुझे इस बात का हमेशा अफसोस रहेगा कि मुझे महानगर को मुसीबत में छोड़कर जाना पड़ा। परन्तु रानी नागिन को रोकने का एकमात्र तरीका उसी द्वीप पर जाना है, जहां पर सर्पयज्ञ किया जा रहा है!
पूरी जान लगाकर तैर रहे नागराज को उस छोटे से द्वीप तक पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा—
प्रणाम, नीर नाग गुरू!
तू... तू बचकर यहां तक कैसे आ गया? आश्चर्य! घोर आश्चर्य!
खैर, आ ही गया है...
... तो यहां से जिन्दा बचकर नहीं जाएगा! रानी नागिन का काम मैं पूरा करूंगा!
क्षमा चाहता हूं नागगुरू, पर आपके वार का असर मुझ पर इस ताबीज के कारण नहीं होगा...
... यह ताबीज मिलते ही मैं इसीलिए यहां के लिए रवाना हो गया था, क्योंकि मैं जानता था कि इसकी मदद से नागगुरू को हराया जा सकता है!...

...और मुझे जो काम करना है, उसके लिए नागगुरू को रास्ते से हटाना बहुत जरूरी है!
इस घूंसे के लिए एक बार फिर माफी मांगता हूं नागगुरू!
धड़ाक
जब रानी नागिन के गले से यह शंख खींचने से भी मेरी शक्तियां वापस नहीं आईं तो मुझे इस स्थान का ध्यान आ गया। यहां पर नाग यज्ञ कुंड के ऊपर दो पुतले लगे हैं। एक मेरा और दूसरा रानी नागिन के वास्तविक रूप का! इनमें से एक शक्तियां देने वाला और दूसरा पुतला शक्तियां ग्रहण करने वाला होना चाहिए। अब अगर इन दोनों पुतलों का...
...स्थान बदल दिया जाए...
...तो शक्ति सोखने वाली रानी नागिन के शरीर में बसी मेरी शक्तियां फिर से मेरे शरीर में आने लगेंगी!...
...और उनके आने का रास्ता यह चमत्कारी शंख बनेगा!

महानगर में विनाश फैला रही रानी नागिन पर यकायक आश्चर्य के बादल मंडराने लगे—
फूऊऊऊऊऊ
अरे! यह क्या हो रहा है? मेरे द्वारा छोड़ी गई विषफुंकार अपना रास्ता क्यों बदल रही है!
अरे! फुंकार के साथ-साथ मेरे शरीर से नागराज की सर्पसेना और दूसरे विशेषनाग भी निकले जा रहे हैं! यह... यह क्या हो रहा है? नागराज ने तो कुछ नहीं किया? वह तो भाग गया था! ओह, समझी!
वह जरूर नागयज्ञ वाले द्वीप पर गया होगा! वहीं पर उसने कुछ किया है। मुझे तुरन्त वहां पर जाना चाहिए। वर्ना... कहीं वह अपनी शक्तियों के साथ-साथ... मेरी शक्तियां भी न खींच ले!
रानी नागिन सही दिशा में सोच रही थी! नागराज की शक्तियां तो उसके शरीर में समा ही रही थीं—

अब किस्मत से रानी नागिन की भी शक्तियां मेरे शरीर में आ गई हैं, तो मुझे उसका फायदा उठाकर ऐसा उपाय सोचना होगा, जिससे यह लड़ाई सचमुच समाप्त हो जाए! और यह काम सिर्फ एक ही तरीके से किया जा सकता है!

कौन सा तरीका नागराज?

इधर नागराज सौडांगी को अपनी योजना समझा रहा था—

और उधर वीरनागों का सेनापति महामंत्री से अपनी योजना की नाकामी की खबर पा रहा था —
गजब हो गया सेनापति! अभी-अभी खबर मिली है कि राजवैद्य ने महाव्याल को बचा लिया है।... और अब वह बेहोश तो है। मगर खतरे से बाहर है। अब हमारी जान तो गई समझो!
समझो कैसे? अभी जान गई तो नहीं है न! लेकिन महाव्याल बच गया तो जान जरूर जाएगी। अभी महाव्याल भी बेहोश है, और रानी नागिन भी यहां नहीं है! अगर यह मौका हम चूक गए तो जिन्दगी चूक जाएगी!
तो फिर हम यह मौका नहीं चूकेंगे!
और राजवैद्य की बांबी में —
रा... राज वैद्य...
बोलने की कोशिश मत कीजिए महाव्याल! महादेव की असीम कृपा है कि आप होश में आ गए...
लेकिन तू होश खोने वाला है राजवैद्य! तूने महाव्याल को बचाने का कुसूर जो किया है!
म... महामंत्री... अक्!
हमने तुम पर एक ही वार करके भागने की एक बड़ी बेवकूफी की थी, महाव्याल! लेकिन इस बार हम तब तक रुके रहेंगे, जब तक तेरी जान रुकी रहेगी!

मौत के द्वार से लौटे महाव्याल में इतनी भी शक्ति नहीं बची थी कि वह अपनी तरफ बढ़ती तलवार के रास्ते से हट पाता—
लेकिन उसे हटने की जरूरत नहीं पड़ी। तलवार सीने में धंसने से पहले ही हवा में ही थम गई—
?
क्योंकि महाव्याल के लिए जिन्दगी का फरिश्ता बनकर आ गया था—
नागराज!
हां, नागराज! और मुझे यह देखकर हैरत हो रही है कि सत्ता के लोभी दरिन्दे सिर्फ धरती पर ही नहीं, पानी के नीचे भी बसते हैं।

अच्छा! पर तू तो मानव नाग है। फिर तू पानी में सांस कैसे ले पा रहा है? और... और हम वीर नागों की तरह बोल भी रहा है!
तुम लोग मेरे बारे में सोचना छोड़कर अपने बारे में सोचो!...
... क्योंकि मैं तुम लोगों का बहुत बुरा हाल करने वाला हूं!
आऽह! महाव्याल के हाथों बच गया तो अपने-आपको तीसमार खां समझने लगा है, नागराज! वह तो शुक्र कर कि नीरनाग महाव्याल तुझसे पानी के अन्दर नहीं लड़ रहा था!...
... नहीं तो तेरा वही हाल होता, जो अब मैं तेरा करने जा रहा हूं!
पानी में उठे 'जलचक्रों' ने नागराज को दूर फेंक दिया—
शाबाश, महामंत्री! अब पहले इसकी बलि समुद्र देव को चढ़ेगी, और उसके बाद महाव्याल की!
इधर नागराज दो पाटों के बीच में पिस रहा था—

और सतह के ऊपर, एक तीसरा पाट उसके सिर पर गिरने वाला था–
गीर गुरू, नागराज ने मेरी सारी शक्तियां छीन लीं। मुझे शक्ति-हीन कर दिया! अब तो मैं जल के अन्दर भी नहीं जा सकती। उसने मेरी पानी में सांस ले सकने की शक्ति को भी छीन लिया है। और फिर वह कहां चला गया, यह भी मुझे पता नहीं है!
उसने मुझ पर भी वार किया है! खैर, वह बचकर जाएगा कहां? अब मैं यज्ञ में ऐसी आहुति डालूंगा कि इस बार नागराज की शक्तियां नहीं, बल्कि उसके प्राण ही खिंच आएंगे!
नागराज के प्राण शायद पहले ही उड़ जाने वाले थे–
क्योंकि जिस तलवार ने महाव्याल को घायल किया था, वही नागराज के शरीर में भी धंस चुकी थी–
परन्तु–
अ... अरे! तुम पर... कोई असर नहीं हुआ! और... तेरा घाव भी भर गया!
तुम अभी मेरी शक्तियों से धीरे-धीरे वाकिफ हो रहे हो सेनापति!

ठीक कहा नागराज! तेरी शक्तियां धीरे-धीरे ही हमको पता चल पाएंगी, क्योंकि हम तुझे उनको इस्तेमाल करने का मौका ही नहीं देंगे!
नागराज को सचमुच मौका नहीं मिला—
उस विशाल सीपी ने नागराज के पूरे शरीर को पलक झपकते कैद कर लिया—
हा हा हा! नागराज तो अब मोती बनकर ही बाहर निकलेगा महाव्याल! परन्तु यहां से लाश बनकर बाहर निकलेगा!
लेकिन नागराज के हाथ ने उस सीपी को पूरी तरह से बन्द होने नहीं दिया—
नागराज ने मुझे संभलने का वक्त दे दिया है कमीनों! मुझमें इतनी शक्ति तो वापस आ ही गई है कि मैं तुम जैसे केकड़ों को मसल सकूं!

महाव्याल में शक्ति आई तो थी, पर उसका सामना नीरनागों से ही था, जो शक्ति में उसके ही समान थे, और संख्या में दो थे–
तू हमसे क्या लड़ेगा, महाव्याल! अब से कुछ पल पहले तक तो तू खड़ा तक नहीं हो पा रहा था। अब तो हमसे जान की भीख मांग ले, तो शायद हम तुझे बिना तड़पाए खत्म कर देंगे!
चोट वाले स्थान पर प्रहार होने से महाव्याल तड़प उठा–
महामंत्री तथा सेनापति को उसे शिकंजे में लेने का मौका तो मिल गया–
पर शिकंजे को कसने का मौका नहीं मिला–
ओह! ये सांप कहां से ?
अरे! नागराज सीपी के अन्दर से नाग छोड़ रहा है! और...और इसने हमको 'नागरस्सी' से कैद कर लिया है!

हां, दुष्टों! और इस नागरस्सी को तुम कभी खोल नहीं पाओगे। तुम्हारा खेल खत्म हुआ! ...
... और मेरा काम! आऽऽऽह!
एकाएक मेरे शरीर में तेज जलन हो रही है। जैसे मेरा शरीर जल रहा हो! आऽऽऽह!
नागराज को यह क्या हो रहा है! यह तो 'तापदेह' के लक्षण हैं! और ये लक्षण सिर्फ नीरगुरू ही पैदा कर सकते हैं। अपने 'स्वाहाग्नि यज्ञ' के जरिए! यानी गुरूदेव कहीं यज्ञ कर रहे हैं! नागराज को मारने के लिए!
और नीरगुरू अपने सारे यज्ञ एक ही यज्ञस्थल पर करते हैं! मुझे तुरन्त वहां पहुंचना होगा। पर पहले इन दोनों दुष्टों को अपने प्रहरियों के हवाले कर दूं!

महाव्याल का ख्याल सही था! नागराज की जान लेने वाला 'स्वाहाग्नि यज्ञ' उसी द्वीप पर हो रहा था–
बस, रानी नागिन! कुछ पलों का इन्तजार और करो! कुछ पलों बाद यह मूर्ति जलकर राख हो जाएगी, और यही हाल नागराज के शरीर का भी होगा! फिर उसकी शक्तियां और तुम्हारी शक्तियां अपने आप ही उसके शरीर से निकल कर तुम्हारे शरीर में समा जाएंगी!
पर तभी–
नहीं! यह अनर्थ कभी नहीं होगा!
महाव्याल!
आप जिन्दा हैं, महाराज! ओह! मेरा सुहाग जिन्दा है। मैं विधवा नहीं हूं! नहीं हूं!
सत्य है रानी! परन्तु तुम सिर्फ राजवैद्य और नागराज के कारण ही सुहागन बनी रही हो। वर्ना मेरे दुश्मनों ने तुमको विधवा बनाने में कोई कसर उठा नहीं रखी थी!
मुझे बताओ कि मेरे घायल और बेहोश होने के बाद क्या घटा था?
जवाब में रानी नागिन सारा घटना-क्रम सुनाती चली गई–
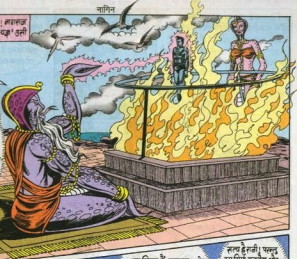
...मैंने तुम्हारी शक्तियां जानबूझ कर नहीं खींची थी रानी नागिन! लेकिन जब मेरी शक्तियों के साथ-साथ तुम्हारी शक्तियां भी मेरे शरीर में आ गईं तो मैंने उनकी मदद से महाव्याल के असली हमलावरों की तलाश करने की सोची! ताकि उनको तुम्हारे हवाले करके इस झगड़े को हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाए!
मैं समुद्र के नीचे गया तो था, हत्यारों की तलाश में, पर वहां पर जो कुछ मुझे सुनाई पड़ा, उससे यही अन्दाजा हुआ कि महाव्याल अभी जिन्दा है, और महामंत्री तथा सेनापति उसे खत्म करना चाहते हैं...
...बस! फिर मैं महाव्याल की तलाश करता हुआ महाव्याल के पास पहुंच गया!...
...और वह भी एकदम ठीक वक्त पर! धन्यवाद, नागराज! ...और अब मैं यह भी समझ गया हूं कि मानवों के कार्यों के लिए उनको सजा देने की कोशिश करना भी बेकार है। फिलहाल अच्छा यही होगा कि हम ही तट से दूर गहरे समुद्र के नीचे अपनी बस्ती बनाएं!
अच्छा ख्याल है, महाव्याल! मानवों को प्रकृति अपने-आप ही सबक सिखा देगी!
और फिर- नागगुरू द्वारा रानी नागिन की शक्तियां रानी नागिन के शरीर में फिर से स्थानांतरित करने के पश्चात नागराज महानगर की तरफ बढ़ चला-
समाप्त.